SWAMI VIVEKANANDA MAHILA MAHAVIDHYALAYA, ROOPANGARH

FACULTY NAME :	SUMAN KUMARI
COURSE :	BA II YEAR
PAPER :	MEDIVAL HISTORY
SUBJECT :	HISTORY
UNIT :	II
SESSION NAME :	VIJAYNAGAR EMPIRE

शिक्षण उद्देश्य (TEACHING OBJECTIVE)

- विद्यार्थी मध्यकालीन विजयनगर साम्राज्य के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- विजयनगर साम्राज्य के संस्थापकों के बारे में जान सकेंगे।

विजयनगर साम्राज्य

1336 ईस्वी में अंतिम यादव शासक ‘संगम’ के दो पुत्रों हरिहर और बुक्का ने मिलकर तुंगभद्रा नदी के तट पर विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की थी। यह दोनों भाई पहले काकतीय राजवंश में सामंत हुआ करते थे, लेकिन आगे चलकर कांपिली राज्य में मंत्री बने थे।

विजयनगर साम्राज्य – 4 राजवंश

- संगम वंश (1336 – 1485 ईस्वी)
- सुलुव वंश (1485 – 1505 ईस्वी)
- तुलुव वंश (1505 – 1570 ईस्वी)
- अराविदु वंश (1570 – 1649 ईस्वी)

संगम वंश (1336 – 1485 ईस्वी)

- इस वंश की स्थापना हरिहर एवं बुक्का ने 1336 ईस्वी में की थी। हरिहर और बुक्का के पिता का नाम संगम था। उन्हीं के नाम पर इस वंश का नाम संगम वंश पड़ा।
- इस वंश का प्रथम शासक हरिहर प्रथम (1336 – 1356 ईस्वी) हुआ, जिसने 1336 ईस्वी में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की और हम्पी को अपनी राजधानी बनाया।
- हरिहर प्रथम को एक समुद्र का अधिपति कहा गया है। हरिहर प्रथम ने 1352-53 ईस्वी में मदुरै पर विजय प्राप्त की थी।

संगम वंश (1336 – 1485 ईस्वी)

- हरिहर प्रथम की मृत्यु के बाद बुक्का प्रथम (1356 – 1377 ईस्वी) विजयनगर साम्राज्य का शासक बना। बुक्का प्रथम को तीन समुद्रों का स्वामी कहा गया है।
- हरिहर द्वितीय (1377 – 1404 ईस्वी) के दरबार में सुदर्शन संग्रह के लेखक माधवाचार्य, हरिविलास नामक ग्रंथ के लेखक श्रीनाथ और ऐतरेय ब्राह्मण के टीकाकार सायण उपस्थित थे। हरिहर द्वितीय ने ही सबसे पहले महाराजाधिराज और राजपरमेश्वर नामक उपाधियाँ धारण की थी।

संगम वंश (1336 – 1485 ईस्वी)

- देवराय प्रथम (1406 – 1422 ईस्वी) के शासनकाल में तुंगभद्रा नदी पर बांध बनवाया गया था और विजयनगर साम्राज्य में नेहरू का विकास किया गया था। इसी शासक के काल में 1420 ईस्वी में इटली का यात्री निकोलो कोंटी विजयनगर साम्राज्य में आया था।
- देवराय द्वितीय (1425 – 1446 ईस्वी) को अभिलेखों में 'गजबेटकर' यानी 'हाथियों का शिकारी' कहा गया है। इसने मुसलमानों को भी जागीर दी थी। इसी के शासनकाल में भारत का राजदूत अब्दुर्रज्जाक विजयनगर साम्राज्य में आया था। देवराय द्वितीय ने 'महानाटक सुधानिधि' नामक संस्कृत ग्रंथ लिखा था तथा बादरायण के ब्रह्मसूत्र पर टीका भी लिखी थी।

सुलुव वंश (1485 – 1505 ईस्वी)

सुलुव वंश की स्थापना नरसिंह सुलुव ने 1485 ईस्वी में की थी। इसमें संगम वंश को समाप्त कर दिया था। यह राजवंश 20 वर्षों के छोटे से शासनकाल में ही समाप्त हो गया था।

तुलुव वंश (1505 – 1570 ईस्वी)

- तुलुव वंश की स्थापना वीर नरसिंह द्वारा 1505 ईस्वी में की गई थी। इस वंश का शासक कृष्णदेव राय समूचे विजयनगर साम्राज्य का सबसे महान शासक हुआ था।
- कृष्णदेव राय ने अमुक्तमाल्यद नामक तेलुगु के प्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की थी। इस ग्रंथ में कृष्णदेव राय की प्रशासनिक नीतियों और उसके राजनीतिक विचारों का उल्लेख किया गया है। इस के दरबार में तेलुगु के आठ विद्वान और कवि रहते थे, जिन्हें इतिहास में 'अष्टदिग्गज' के नाम से जाना जाता है

तुलुव वंश (1505 – 1570 ईस्वी)

- कृष्णदेव राय के बाद अच्युतदेव राय और सदाशिव तुलुव वंश के प्रमुख शासक हुए थे। सदाशिव के शासनकाल के दौरान ही 1565 ईस्वी में तालीकोटा का निर्णायक युद्ध हुआ था। जिसमें विजयनगर साम्राज्य की सेना को चार बहमनी राज्यों बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदनगर और बीदर ने मिलकर पराजित किया था। इस युद्ध के बाद विजयनगर साम्राज्य का पतन लगभग स्पष्ट हो गया था।

अराविदु वंश (1570 – 1649 ईस्वी)

अराविदु वंश की स्थापना 1570 ईस्वी में तिरुमल नामक व्यक्ति द्वारा की गई थी। वेंकट द्वितीय इस वंश का एक प्रमुख शासक था, जिसने अपनी राजधानी चंद्रगिरी में स्थानांतरित की थी। यह वंश विजयनगर साम्राज्य का अंतिम वंश था। इसके बाद विजयनगर साम्राज्य पूर्ण रूप से समाप्त हो गया था।

विजयनगर साम्राज्य

गौरतलब है कि मध्यकालीन इतिहास को मूल रूप से मुस्लिम शासकों द्वारा शासित इतिहास के रूप में जाना जाता है, लेकिन इसी बीच लगभग 300 वर्षों तक हिंदू शासन के रूप में विजयनगर साम्राज्य अपना अस्तित्व बनाए हुए था। इस दौरान विजयनगर साम्राज्य ने न सिर्फ विभिन्न सफल प्रशासनिक व्यवस्थाओं का सूत्रपात किया, बल्कि देश के सांस्कृतिक इतिहास में भी अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस दृष्टि से विजयनगर साम्राज्य भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

THANK YOU